अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम – जैन धर्म परिचय (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) नमस्कार मन्त्र में गुरु पद कितने हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 4 (ख)

(b) 'उत्तरीकरण सूत्र' में आगार कितने बताए गए हैं-
(क) 6 (ख) 9
(ग) 5 (घ) 12 (घ)

(c) एक सामायिक कितने मुहूर्त्त की होती है-
(क) 1 मुहूर्त्त (ख) 5 मुहूर्त्त
(ग) 2 मुहूर्त्त (घ) 1.5 मुहूर्त्त (क)

(d) तिक्खुत्तो के पाठ में नमंसामि बोलते हुए कितने अंगों को झुकाया जाता है-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 5 (घ) 1 (ग)

(e) किस भाषा में 'त्र', 'ज्ञ' शब्द नहीं होता है-
(क) संस्कृत (ख) हिन्दी
(ग) प्राकृत (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(f) पर्याप्ति के भेद हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 3 (घ) 5 (ख)

(g) मिथ्यात्व के भेद हैं-
(क) 10 (ख) 6
(ग) 4 (घ) 12 (क)

(h) सातवें नम्बर का प्राण है-
(क) घ्राणेन्द्रिय (ख) वचन
(ग) काय (घ) आयुष्य (ख)

(i) 'सत गुरु देय जगाय' किस भावना की पंक्ति है-
(क) आश्रव भावना (ख) लोक भावना
(ग) संवर भावना (घ) निर्जरा भावना (ग)

(j) 'दाम बिना निर्धन दुखी' पंक्ति में भावना है-
(क) अशरण (ख) संसार
(ग) अन्यत्व (घ) अशुचि (ख)

(k) साहरण की रात्रि में माता त्रिशला ने कितने स्वप्न देखें-
(क) 07 (ख) 15
(ग) 14 (घ) 21 (ग)

(l) गौतम स्वामी कितने वर्षों तक गणधर के पद पर आसीन रहें-
(क) 20 (ख) 25
(ग) 21 (घ) 30 (घ)

(m) 'जिसने पीड़ सुनी हर प्राणी की' पंक्ति में स्तुति है-
(क) देव स्तुति (ख) सिद्ध स्तुति
(ग) महावीर स्तुति (घ) गणधर स्तुति (ग)

(n) अभिगम के भेद हैं-
(क) 3 (ख) 5

(ग) 2 (घ) 10 (ख)

(o) 'अणगार' होते हैं-

(क) श्रावक (ख) साधु

(ग) श्राविका (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) शब्द के अन्त में अनुस्वार आये तो 'म्' बोला जाता है। (हाँ)

(b) काया के दस दोष होते हैं। (नहीं)

(c) नमोत्थु णं पाठ का दूसरा नाम 'शक्रस्तव' है। (हाँ)

(d) 'औदारिक' शरीर का भेद है। (हाँ)

(e) 'विभंगज्ञान' ज्ञान का भेद है। (नहीं)

(f) 'आप अकेला अवतरे' अन्यत्व भावना की पंक्ति है। (नहीं)

(g) 'जियो और जीने दो' महावीर का प्रमुख आदर्श था। (हाँ)

(h) मृगावती चतुर्विध संघ की प्रथम साध्वी थी। (नहीं)

(i) 'भगवन्! क्या जिन शासन में सत्य का भी प्रायश्चित्त होता है', यह पंक्ति गौतम गणधर ने कही थी। (नहीं)

(j) भगवान महावीर ने शरणागत को पार किया। (हाँ)

(k) जीव अजीव को तोलकर अनमोल ज्ञान भगवान महावीर ने दिया। (हाँ)

(l) जैन धर्म में अरिहंत को अशरीरी देव कहा गया है। (नहीं)

(m) 'गुरु' हमें ज्ञान रूपी चक्षु प्रदान करते हैं। (हाँ)

(n) 'साधु' सचित्त वनस्पति का स्पर्श करते हैं। (नहीं)

(o) श्रावक पाँच महाव्रतों का निरतिचार पालन करते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	आलस्य दोष	(क) संसार भावना	काया का दोष
(b)	सावज्जं	(ख) वर्धमान	सामायिक सूत्र
(c)	उपयोग	(ग) महावीर स्तुति	12
(d)	तृष्णावश धनवान	(घ) अभिगम	संसार भावना
(e)	यशोदा	(च) सम्यक् दर्शन	वर्धमान
(f)	मुनि दर्शन मुक्ति गामी	(छ) सर्वज्ञ	महावीर स्तुति
(g)	त्रिशला नंदन	(ज) काया का दोष	महावीर
(h)	उत्तरासंग	(झ) सामायिक सूत्र	अभिगम
(i)	अरिहंत	(य) महावीर	सर्वज्ञ
(j)	श्रद्धा	(र) 12	सम्यक् दर्शन

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मैं समता का विकास करने की क्रिया हूँ।	सामायिक
(b)	मेरा दूसरा नाम 'ईर्यापथिक सूत्र' है।	इच्छाकारेणं का पाठ
(c)	मेरे द्वारा 24 तीर्थंकरों की स्तुति की जाती हैं।	लोगस्स का पाठ
(d)	मैं मन का छठा दोष हूँ।	निदान दोष
(e)	मैं सामायिक समाप्ति सूत्र हूँ।	एयस्स नवमस्स का पाठ
(f)	मेरे 8 विषय और 96 विकार हैं।	स्पर्शनेन्द्रिय
(g)	मैं दसवें बोल का अन्तिम भेद हूँ।	अन्तराय कर्म
(h)	मैं सातवें बोल का तीसरा भेद हूँ।	आहारक
(i)	मैं काया का चौथा भेद हूँ।	वायुकाय

(j)	मैं 12 भावना का छठा भेद हूँ।	अशुचि भावना
(k)	मुझे दीक्षा लेते ही मनपर्यवः ज्ञान हो गया।	भगवान महावीर
(l)	मुझे भगवान महावीर ने साध्वी संघ का प्रमुख बनाया।	चन्दनबाला
(m)	मैं धर्मस्थानक जाते समय पालन करने योग्य नियम हूँ।	अभिगम
(n)	मेरा वर्णन स्थानांग सूत्र के तीसरे स्थान में किया गया है।	तीन मनोरथ
(o)	चौबीस तीर्थंकरों में मेरा आठवाँ नाम है।	चन्द्रप्रभजी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) सामायिक में लगने वाले मन के प्रथम पाँच दोष लिखिए।
1 अविवेक, 2. यशोकीर्ति, 3. लाभेच्छा, 4. गर्व, 5. भय।

(b) नमोत्थु णं पाठ उच्चारण करते समय कौनसा घुटना ऊँचा किया जाता है तथा दोनों हाथ जोड़कर कहाँ रखते हैं ?
बाँया घुटना ऊँचा करते हैं तथा दोनों हाथ जोड़कर बायें घुटने पर रखते हैं।

(c) अगार धर्म किसे कहते हैं ?
व्रत ग्रहण में रखी जाने वाली छूट को अगार धर्म कहते हैं।/घर में रहकर आंशिक रूप से जिन छोटे-छोटे नियमों व बारह व्रतों का पालन किया जाए, उसे अगार धर्म कहते हैं।

(d) प्राकृत भाषा में कौन-कौन से शब्द नहीं होते हैं ?
ऐ, औ, ऋ, लृ, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ

(e) श्रोत्रेन्द्रिय के तीन विषयों के नाम लिखिए।
जीव शब्द, अजीव शब्द, मिश्र शब्द।

(f) चन्दन बाला कितनी साध्वियों की प्रमुखा थी ?
36000

(g) गौतम स्वामी ने किससे कहा कि 'श्रावक को इतना अवधि ज्ञान नहीं हो सकता' ?
आनन्द श्रावक

(h) पाँच अभिगमों के नाम लिखिए।
1. सचित्त का त्याग, 2. अचित्त का विवेक, 3. उत्तरासंग, 4. अंजलीकरण, 5. मन की एकाग्रता।

(i) 24 तीर्थंकरों में से अन्तिम दो तीर्थंकरों के नाम लिखिए।
पार्श्वनाथ जी एवं महावीर स्वामी जी।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) वचन के दस दोष लिखिए।
1. कुवचन, 2. सहसाकार, 3. स्वच्छन्द, 4. संक्षेप, 5. कलह,
6. विकथा, 7. हास्य, 8. अशुद्ध, 9. निरपेक्ष और 10. मुणमुण।

(b) सामायिक व्रत किस पाठ से लिया जाता है तथा किस पाठ से समाप्त किया जाता है ?
करेमि भंते से लिया जाता है तथा एयस्स नवमस्स का पाठ से समाप्त किया जाता है।

(c) कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ लिखिए।
कायोत्सर्ग में आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया हो।
कायोत्सर्ग में मन, वचन, काया चलित हुए हों, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(d) सामायिक का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?
सामायिक का प्रमुख उद्देश्य प्रिय-अप्रिय, निंदा-विकथा, सत्कार-तिरस्कार, हानि-लाभ, जीवन-मरण, शत्रु-मित्र इत्यादि विविध अवस्थाओं में शांत चित्त रहने की क्षमता का विकास करना है।

(e) पाँच शरीर के नाम लिखिए।
1. औदारिक, 2. वैक्रिय, 3. आहारक, 4. तैजस्, 5. कार्मण शरीर।

(f) भगवान महावीर की अन्तिम देशना किस सूत्र में है तथा किस राजा की प्रार्थना पर पावापुरी में चातुर्मास किया ?

भगवान महावीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र में है तथा हस्तीपाल राजा की प्रार्थना पर पावापुरी में चातुर्मास किया।

(g) श्रावक के पाँचवें अभिगम को परिभाषित कीजिए।

मन की एकाग्रता- अपने सभी गृहकार्यों के प्रपंचों या पापकार्यों से मन को हटाकर देव-गुरु जो फरमाते हैं, उनकी वाणी को ध्यानपूर्वक सुनना, मन को उनकी वाणी पर ही एकाग्र रखना तथा उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना-ये श्रावक का पाँचवाँ अभिगम है।

(h) पहले से छठे नम्बर के तीर्थंकरों के नाम लिखिए।

1. श्री ऋषभदेव जी 2. श्री अजितनाथ जी 3. श्री सम्भवनाथ जी
4. श्री अभिनन्दन जी 5. श्री सुमतिनाथ जी 6. श्री पद्मप्रभ जी

(i) श्रावक के तीन मनोरथों में से पहला मनोरथ लिखिए।

वह दिवस मेरा धन्य होगा जब मैं अपने नौ प्रकार के बाह्य परिग्रह (खेत-वत्थु आदि) और चौदह प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह (4 कषाय, 6 नोकषाय व मिथ्यात्व) जो आत्मा के लिए सबसे बड़े बंधन हैं, उनको त्याग कर प्रमोद भाव का अनुभव करुँगा। ममता के भार से मन को हल्का करुँगा। वह दिन मेरे लिए परम कल्याणकारी व मंगलकारी होगा।